दाण्डी यात्रा : भारत में आत्मनिर्भरता हेतु प्रेरणा स्रोत

डॉ. रजनी दुबे

प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान

शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सारांश -

दाण्डी यात्रा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की उन युगान्तकारी घटनाओं में से एक है, जिसने स्वतंत्रता प्राप्ति के एक स्वप्न को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस यात्रा के माध्यम से गांधीजी ने अपने सत्याग्रही साथियों की मदद से सत्य का ऐसा रास्ता आविष्कृत किया और अंग्रेजो की सत्ता को उखाड़ फेंका।

इस ऐतिहासिक यात्रा का भारत की आजादी में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। गांधीजी का दाण्डी मार्च आज भी मुश्किल वक्त में सही फैसला करने की राह दिखाता है। भारत की आजादी में दाण्डी मार्च की खास अहमियत रही है। इस आंदोलन के माध्यम से महात्मा गांधीजी ने एक बार फिर दुनिया को सत्य और अहिंसा की ताकत का परिचय कराया था। इसी वजह से इसके आगाज के दिन को भारत की आजादी के 75 वर्ष के भव्य समारोह के शुभारंभ के लिये चुना गया।

मुख्य शब्द - आजादी, दाण्डी मार्च, साबरमती आश्रम, सत्याग्रही, प्रतीकात्मक आंदोलन, संस्कृति।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में दाण्डी मार्च सबसे प्रभावशाली प्रतीकात्मक आंदोलन रहा हैं। भारत में नमक बनाने की परपंरा प्राचीन काल से रही है। परंपरागत ढंग से नमक बनाने का काम किसानों द्वारा किया जाता है, जिन्हें नमक किसान भी कहा जाता है, पहले यह कार्य खास जाति के लोगों के हवाले था बाद में नमक बनाने की तकनीक में धीरे-धीरे सुधार हुआ। समय के साथ नमक भारत की वस्तु की बजाय व्यापार की वस्तु बनने लगा। उसी दौरान अंग्रेजी सरकार ने कानून बनाकर भारतीयों द्वारा नमक बनाने को प्रतिबंधित कर दिया। भारतीयों में इसका बहुत विरोध हुआ। उस कानून को तोड़कर भारतीयों को उनका हक दिलाने के लिए गांधीजी ने दाण्डी मार्च किया।

दाण्डी: एक धार्मिक आन्दोलन - यंग इंडिया के 27 मार्च के अंक में गांधीजी ने 'अनिष्ठा का कर्त्तव्य' नाम के शीर्षक से एक लेख द्वारा लोगों का आह्वन किया। इसमें उन्होनें स्पष्ट रूप से घोषणा की कि ''सक्रिय निष्ठा व सकिय अनिष्ठा के बीचों-बीच कोई तादात्म्य नहीं है।'' उन्होंने आगे कहा कि वास्तव में इतनी भ्रष्ट सरकार

के प्रति निष्ठा पाप है, अनिष्ठा पुण्य हैं। उन्होंने कहा था ''मैं इसे एक धार्मिक आंदोलन मानता हूं, क्योंकि राजद्रोह हमारा धर्म हैं।''

युवाओं को संबोधित करते हुए पंडित जवाहर लाल नेहरु ने कहा- ''संग्राम का मैदान आपके सामने है भारतीय ध्वज आपको इशारा कर रहा है और स्वतंत्रता स्वयं आपके गले में वरमाला डालने की प्रतीक्षा में हैं।'' उन्होंने यह भी कहा कि- ''भारत का अंत हो जाये तो कौन जिन्दा रहेगा ? भारत जिन्दा रहे तो कौन मर सकता हैं।

दाण्डी मार्च पृष्ठभूमि -

- वर्ष 1929 की लाहौर कांग्रेस ने कांग्रेस कार्य समिति को करों का भुगतान न करने के लिये सविनय अवज्ञा कार्यक्रय शुरू करने के लिये अधिकृत किया था।
- 26 जनवरी 1930 को स्वतंत्रता दिवस मनाया गया जिसके अंतर्गत विभिन्न स्थानों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराकर देशभक्ति के गीत गाए गये।
- साबरमती आश्रम में फरवरी 1930 में कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक में गांधीजी को अपने अनुसार समय और स्थान का चयन कर सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरु करने के लिए अधिकृत किया गया। गांधी ने भारत के वायसरस राय वर्ष (1926-31) लॉर्ड इरविन को अल्टीमेट दिया कि यदि उनके न्यूनतम मांगो को नजरअंदाज कर दिया गया तो उनके पास सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरु करने के अलावा और कोई दूसरा रास्ता नहीं बचेगा। आंदोलन के अनेक प्रभाव थे ।
- सविनय अवज्ञा आंदोलन को विभिन्न प्रांतो में अलग-अलग रूपों में शुरू किया गया, जिसमें विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार पर विशेष जोर दिया गया पूर्वी भारत में चौकीदार कर का भुगतान करने से इंकार कर दिया गया, जिसके अंतर्गत नो-टैक्स अभियान बिहार में अत्यधिक लोकप्रिय हुआ।
- जे. एन. सेनगुप्ता ने बंगाल में सरकार द्वारा प्रतिबंधित पुस्तकों को खुलेआम पढ़कर सरकारी कानूनों की अवहेलना की।
- महाराष्ट्र में वन कानूनों की अवहेलना बड़े पैमाने पर की गई।
- यह आंदोलन अवध, उड़ीसा, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश और असम के प्रांतों में आग की तरह फैल गया।

महत्व -

- इस आंदोलन के परिणामस्वरूप भारत में ब्रिटिश का आयात काफी गिर गया। उदाहरण के लिए ब्रिटेन से कपड़े का आयात आधा हो गया।
- यह आंदोलन पिछले आंदोलन की तुलना में अधिक व्यापक था, जिसमें महिलाओं, किसानों श्रमिकों, छात्रों और व्यापारियों तथा दुकानदारों जैसे शहरी तत्वों ने बड़े पैमाने पर भागीदारी की अतः अब

कांग्रेस को अखिल भारतीय संगठन का स्वरुप प्राप्त हो गया।

- इस आंदोलन को करवे और देहात दोनों में गरीबो तथा अनपढ़ों से जो समर्थन हासिल हुआ, वह उल्लेखनीय था।
- इस आंदोलन में भारतीय महिलाओं की बड़ी संख्या में खुलकर भागीदारी उनके लिए वास्तव में मुक्ति का सबसे अलग अनुभव था।
- यद्यपि कांग्रेस ने वर्ष 1934 में सविनय अवज्ञा आंदोलन वापिस ले लिया, लेकिन इस आंदोलन ने वैश्विक स्तर पर ध्यान आकर्षित किया और साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

2 मार्च 1930 को लॉर्ड इरविन को लिखे एक पत्र में गांधी ने कहा था कि "राजनीतिक दृष्टि से हमारी स्थिति गुलामों से अच्छी नहीं है। हमारी संस्कृति की जड़े खोखली कर दी गई है। हमारा हथियार छीनकर हमारे सारे पौरूष का अपहरण कर लिया गया है।" गांधी जी ने अपने 79 अनुयायियों के साथ-साथ तय कार्यक्रम के अनुसार 12 मार्च को साबरमती आश्रम से दाण्डी मार्च प्रारंभ किया। दाण्डी तक की करीब 388 किलोमीटर की दूरी उन्होंने 24 दिनों में पूरी की इस दौरान गांधीजी जहां पर विश्राम करते, वही जनसमूह को संबोधित करते। उनके भाषणों ने लोगों में अंग्रेजो के जुल्म के विरुद्ध माहौल पैदा कर दिया। दाण्डी यात्रा के दौरान यह तय किया गया कि नमक कानून पर ही लोग अपनी शक्ति केंद्रित रखे साथ ही उन्हें यह चेतावनी भी दी गई कि गांधीजी के दाण्डी पहुंचकर नमक कानून तोड़ने से पहले सविनय अवज्ञा शुरु नहीं किया जायेगा। 4 अप्रैल 1930 को रात्रि में पदयात्रा ने दाण्डी में प्रवेश किया। 5 अप्रैल को प्रातः खादी धारण किये हुये सैकड़ों गांधीवादी सत्याग्रही दाण्डी तट पर एकत्र हुये। 6 अप्रैल को प्रातः दाण्डी तट पर हाथ में नमक लेकर गांधी ने नमक कानून तोड़ा। गांधीजी ने संदेश में कहा था - त्याग के बिना मिला हुआ स्वराज टिक नहीं सकता। अतः संभव है जनता को असीम बलिदान करना पड़े।

भारत की आजादी का यह सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव था, जो दाण्डी यात्रा से निकला था। गांधीजी का दाण्डी मार्च वर्तमान समय के मुश्किल वक्त में सही फैसला करने की राह दिखाता है और लोगों को त्याग की अहमियत समझाता है। गांधीजी की दाण्डी यात्रा के साथ संपूर्ण भारत में राष्ट्रीय चेतना की लहर चल पड़ी। इसी कड़ी में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का कथन भी प्रासंगिक है कि भारत का सफर अब स्वावलंबन और स्वाभिमान के साथ तय होगा अब हम दुनिया के सामने याचक नहीं होंगे। अब हमारी छवि दुनिया अपने कैनवास पर दाता के रूप में बनायेगी। हमने विश्व में संकट के समय में दवा हो या वैक्सीन दूसरे देशों को अपना कुटुम्बी मानकर पहुंचाई है। हम श्रम की भाषा इसलिये बोलना चाहते है कि हमारी आने वाली नस्लें दीनता की भाषा न बोले। देश जब आजादी का 100वां महोत्सव मनायेगा तो पूरी दुनिया के सामने हम एक ऐसा उदाहरण होंगे, जिसके विजयगीत दुनिया के हर आंगन में दोहराये जायेंगे और हमारी संस्कृति का वैभव गान हर दिल में होगा।

महात्मा गांधी के अहिंसा आंदोलन की वजह से हमारे स्वतंत्रता सेनानियों को खूब मदद मिली और 200 वर्षो के लंबे संघर्ष के बाद ब्रिटिश शासन से आजादी मिली। आजादी के लिये किये गये कड़े संघर्ष ने उत्प्रेरक का काम किया, जिसने ब्रिटिश शासन के खिलाफ अपने अधिकारों के लिये हर भारतीय को एक साथ किया, चाहे वो किसी भी धर्म, वर्ग, जाति, संस्कृति या परम्परा को मानने वाले हों। यहां तक कि अरूणा आसिफ अली, एनी बेसेन्ट, कमला नेहरू, सरोजिनी नायडू और विजय लक्ष्मीपंडित जैसी महिलाओं ने भी चूल्हा चौका छोड़कर आजादी की लड़ाई में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

गांधीजी का कहना है कि कल की दुनिया अहिंसा पर आधारित समाज होगी, होनी भी चाहिये। यह एक दूरस्थ लक्ष्य, एक अव्यवहारिक यूटोपिया मालूम हो सकता है, लेकिन यह अप्राप्य कदापि नही है। क्योंकि इस पर आज ही और अभी से अमल किया जा सकता है। कोई भी व्यक्ति दूसरों की प्रतीक्षा किये बिना भावी संसार की जीवन पद्धति को अहिंसक पद्धति को अपना सकता है और यदि व्यक्ति ऐसा कर सकता है, तो पूरे व्यक्ति समूह क्यों नहीं कर सकते? समूचे राष्ट्र क्यों नहीं कर सकते? लोग अक्सर शुरूआत करने से इसलिये हिचकिचाते हैं कि उन्हें लगता है कि लक्ष्य को पूरी तरह प्राप्त नहीं किया जा सकेगा। हमारी यह मनोवृत्ति ही प्रगति के मार्ग की सबसे बड़ी रूकावट है। यह रूकावट ऐसी है, जिसे हर आदमी, अगर वह चाहे तो दूर कर सकता है। विश्व के एक हजार वर्ष के इतिहास में महात्मा गांधी जैसा व्यक्तित्व पैदा नहीं हुआ है, जिन्होंने अहिंसा के पथ पर चलकर देश को आजादी दिलवाई। गांधीजी ने दाण्डी यात्रा के माध्यम से देश को आजाद करने का संकल्प लिया था, उसे पूरा किया। वर्तमान में इस दाण्डी यात्रा का संदेश है आत्मनिर्भर भारत का निर्माण।

संदर्भ -

1. द इंडियन एक्सप्रेस : 4 अगस्त 2009 मुख्य पृष्ठ 1
2. दाण्डी मार्च, महात्मा गांधी साल्ट मार्च दिनांक 12 मार्च 2021 अमर उजाला, पृष्ठ 4
3. तफर-फि : दाण्डी मार्च का आजादी में योगदान, पृष्ठ 5
4. नई दुनिया, नीमच न्यूज : डॉ. जे. के. मांदलिया दिनांक 18 मार्च 221, पृष्ठ 4
5. प्रभु आर.के एवं राव, यू.आर. महात्मा गांधी के विचार, नेशनल बुक ट्रस्ट नई दिल्ली, संस्करण 2005, पृष्ठ 88
6. भट्टाचार्य ,सव्यसाचि, महात्मा और कवि, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, संस्करण 2005, पृष्ठ 158-159
7. https://bharatdiscovery.org.india
8. https://hindi,news18.com.news
9. हरिजन, 28.09.1934, पृ. 259